भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या

★ डॉ सत्या मिश्रा
ऐसोशिएट प्राफेसर–समाजशास्त्र
नारी शिक्षा निकेतन स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, लखनऊ।

भारत में साम्प्रदायिकता की समस्या के विश्लेषण से पूर्व उसके समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यों को जानना आवश्यक है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से साम्प्रदायिकता ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जिससे कोई समुदाय अपनी सामाजिक–आर्थिक अभिलाषाओं की सामाजिक परंपराओं के शोषण तथा स्थापित समूहों के हितों को ठेस पहुँचाकर पूर्ति का प्रयास करते हैं। यह जनतांत्रिक मूल्यों के विपरीत एक प्रकार का नृजाति – केन्द्रवाद है।

भारतीय संदर्भ में संप्रदाय वाद की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि है। यह उपनिवेशवादी शासकों द्वारा अपने हित पूर्ति हेतु, प्रवर्तित संप्रेषित नकारात्मक विचारधारा है जिसका परिलक्षण भारत–विभाजन जैसी प्रघटना में होता है। भारत में साम्प्रदायिकता की प्रकृति बहु आयामी है। सामान्यतः साम्प्रदायवाद को धार्मिक समुदाय से संबद्ध करके परिभाषित किया जाता है अर्थात् जब किसी समुदाय के सदस्य धर्म निरपेक्ष हित या पक्षों को धर्म विशेष की दृष्टि से देखते हैं तथा उसे न्यायोचित वैधानिक सिद्ध करते हैं तो साम्प्रदायिक विचारों को बल मिलता है और वैमनस्य का जन्म होता है यह सामाजिक वैमनस्य साम्प्रदायिक दंगो को जन्म देता है यथा – बावरी मस्जिद विध्वंस से उत्पन्न हिंदू–मुसलिम दंगे। संप्रदायवाद के आयामों ने जातिवाद, जनजातिवाद, क्षेत्रीयता, धार्मिक कह्रपंथ सदृश चहुँमुखी चरित्र प्राप्त कर लिया है। स्वतंत्रता के पश्चात् कुछ प्रारम्भिक वर्षों में सांप्रदायिक विचारधारा ने मुख्यतः अल्प–संख्यकों, दलित –वंचित वर्गों, जनजातियों व धार्मिक समूहों की आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक वंचनाओं का उपयोग कर अपनी व्यापकता को विस्तार दिया है। आगे चलकर संप्रदायवाद तथा इसके धार्मिक संस्करण ने कट्टरवाद का रूख अपनाया है। यह मात्र सामाजिक–आर्थिक वंचना का परिणाम नहीं वरन् धार्मिक संप्रदायों के भीतर उदीयमान नये वर्गों व समूहों द्वारा प्राप्त उच्चतर आर्थिक स्तरों को प्राप्त करने की प्रवृत्ति दर्शाता है। यद्यपि आधुनिक समाज में आधुनिकता के मूल्य उदित हुए हैं तथापि आर्थिक अवसरों में असमता, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, विरसन, आर्थिक–सामाजिक वंचना तथा कुछ हद तक आर्थिक–सामाजिक प्रगति के अन्तर्विरोधों से उत्पन्न सामाजिक कुंठाओं की संतति माना जा सकता है।

संप्रदायिक विचारों ने आधुनिकीकरण तथा सामाजिक विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न की है साराँशतः इस समस्या को सत्वर आर्थिक प्रगति, अनुपातिक न्याय तथा संरक्षी नीतियों के क्रियान्वयन द्वारा दूर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. सिंह, योगेन्द्र :1999, भारत में सामाजिक परिवर्तन संकट और समुत्थानपरकता, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
2. रावत, हरिकृष्णः 2007, उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
3. आहुजा, रामः 1999, भारतीय सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
4. हसनैन, नदीमः 2004, समकालीन भारतीय समाज एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य, भारत बुक सेंटर, लखनऊ।

मध्यम वर्ग

(Middle Class)

किसी समाज की आर्थिक तथा सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था का वह भाग जिसका स्तर न तो अत्यधिक निम्न होता है और न ही अत्यधिक उच्च, मध्यमवर्ग कहलाता है। यह सामाजिक वर्ग कुलीन वर्ग तथा कामगार अथवा मजदूर वर्ग द्वारा बने सामाजिक माप के दो छोरों के मध्य में स्थित होता है। मध्यम वर्ग आद्यौगिक समाजों की विशेषता है। कार्ल मार्क्स ने औद्योगिक समाजों में दो वर्गों का उल्लेख किया है–

1. पूँजी पति या बुर्जुआ वर्ग
2. श्रमिक या सर्वहारा वर्ग

मार्क्स के अनुसार 19 वीं शताब्दी के पूंजीवादी समाजो में पिरामिड वर्ग संरचना पाई जाती है। इन दोनों वर्गों के बीच में एक अन्य वर्ग मध्यम वर्ग भी स्थित होता है जोकि सर्वहारा क्रान्ति के समय दो भागों में बंट जाता है–एक भाग का बुर्जुआकरण हो जाता है और दूसरे भाग का सर्वहारा करण। कुछ–व्यक्ति पूँजीपति वर्ग में समायोजित हो जाते है और कुछ श्रमिक में, इसीलिए इस सिद्धान्त को 'मध्य वर्ग की समाप्ति का सिद्धान्त' भी कहा जाता है। 'एन्टोनियो ग्राम्शी' ने आधुनिक पूँजी वादी समाज में मध्यम वर्ग की भूमिका की विवेचना की है। 'राल्फ डाहरेनडार्फ' ने स्पष्ट किया किया कि आधुनिक 20वीं शताब्दी के पूँजीवादी समाजों में षटकोणीय (Hexagon) वर्ग सरंचना का उदय हो रहा है जिसमें मध्यम वर्ग का विस्तार होता है और यह सबसे बड़े वर्ग के रूप में उभरता है। 'जॉन एच गोल्ड थ्रोप' ने 'Social Mobility and class structure in Britain' नामक पुस्तक में वर्ग –विभाजन किया और चार वर्ग बताये हैं। इन्होने परम्परागत रूप से सेवी वर्ग (Service Class) को उच्च मध्यम वर्ग, कनिष्ठ सेवी वर्ग को मुख्य मध्यम वर्ग तथा अन्य वर्गों को निम्न मध्यम वर्ग कहा है। भारत में मध्यम वर्ग का विश्लेषण डी0पी0 मुखर्जी तथा ए0आर0 देसाई ने किया है। पवन कुमार वर्मा की मध्यम वर्ग पर दो प्रसिद्ध पुस्तकें हैं– The Great Indian Middle Class तथा The New Indian Middle Class. इसी प्रकार से बी0बी0 मिश्रा की पुस्तक है– The Indian Middle Classes: Their Growth in Modern Times.

कुछ समाजशास्त्रीयों ने मध्यम वर्ग को दो भागों में बाँटा है–पुराना मध्यम वर्ग(20वीं शताब्दी के पूर्व का मध्यम वर्ग) तथा नव मध्यम वर्ग (Petite या Petty Bourgeoisie)

वैश्वीकरण की प्रक्रिया और सूचना प्रौद्योगिकी ने मध्यम वर्ग के आकार में वृद्धि की है।

संदर्भ ग्रंथः–

1. देसाई, ए0आर0ः 2018, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, से प्रकाशन। (अनु0 कमल नयन चौबे)
2. हैरलम्बॉस, एम हेल्ड, आर0 एम0ः 2003, सोशियोलॉजी : थीम्स एण्ड पर्सपेक्टिवस, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।
3. वर्मा, पवन के0, : 2007, द ग्रेट इंडियन मिडिल क्लास, पेंग्विन इंडिया (रिवाइज्ड एडीशन)
4. वर्मा, पवन के0 : 2014, द चैलेंज ऑफ 2014 एण्ड बियॉण्ड द न्यू इंडियन मिडिल क्लास, हारपर कॉलिन्स।